International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 18
DECEMBER 2016

मालती जोशी जी के साहित्य में नारी चेतना

कविता कुमारी
एसिस्टैंट प्रोफेसर,
सी0आर0ए0 कॉलेज,
सोनीपत–131001

शोध आलेख सारः–

सर्वविदित है कि नारी का स्थान न केवल सृष्टि में बल्कि साहित्य में भी सबसे आगे रहा है। वेद–पुराणों से लेकर अब तक नारी को पूज्यनीय माना जाता है। लेकिन देवी का दर्जा देने के बावजुद कई स्थलों पर नारी की अवहेलना होती है। उसके अधिकारों को कुचल दिया जाता है, उसे केवल भोग की वस्तु समझा जाता है। लेकिन इन सभी व्यर्थ मतों की समाप्ति व नारी जागृति हेतु प्राचीन समय से ही अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण है मालती जोशी जी। इन्होंने कहानियों के माध्यम से समाज से जुड़ी अनेक समस्याओं के साथ–साथ नारी चेतना को भी प्रमुखता दी है। उनकी कहानियों में विविध उम्र, वर्ग, शिक्षा, स्तर और परिवेश की नारी पात्राएं है। मालती जी ने नारी शेषण के विरुद्ध अपनी प्रत्येक रचना में नारी सम्बन्धी समस्या को उठाकर पुरुष–प्रधान समाज को चौकन्ना कर दिया है।

सुप्रसिद्ध लेखिका मालती जोशी जी देश की स्वतन्त्रता के बाद की अग्रणी कहानीकार है। इनका जन्म औरंगाबाद में 4 जून सन् 1934 ई0 को महाराष्ट्रीय ब्राह्मण परिवार में हुअ था। इनको पिता श्री कृष्ण राव और माता श्रीमती सरला से अच्छे संस्कार मिले। इन्होंने आगरा से हिन्दी में एम0ए0 की परीक्षा पास की है। इनके पति श्री सोमनाथ जोशी भोपाल में इंजीनियर थे। इनके दो पुत्र है साहित्यकार मां के दोनों पुत्र कलाकार है। मालती जी सुप्रसिद्ध लेखिका होने के साथ–साथ एकसफल गृहिणी भी है।

इनके साहित्य में जवानी होती बेटी को पिता की चिंता, महंगाई, दहेज प्रथा आदि का प्राय उल्लेख मिलता है। इन्होंने अपनी सुक्ष्म दृष्टि से जीवन और जगत की अनुभूतियों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। ये स्वभाव से विनोद प्रिय है बहुमुखी प्रतिभा की धनी मालती जी कवयित्री होने के साथ–साथ बालकहानीकार, व्यंग्यकार, रेड़ियों नाटककार और कुशल अनुवादिका भी है। इन्होंने साहित्य क्षेत्र में प्रवेश गीतों के माध्यम से किया था। यह विद्यार्थी काल से ही कविताएं लिखा करती थी। मराठी भाषी परिवार को हिन्दी कवयित्री आगे चलाकर हिन्दी कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुई। उन्होंने स्वयं लिखा है मैं किशोर वयस् से गीत लिखा करती थी पर बाद में लगा अपनी भावनाओं को सही अभिव्यक्ति के लिए कविता का कैनवास बहुत छोटा है। कविता की धारा सूख गई और कहानी का जन्म हुआ है इनकी पहली कहानी सन् 1971 ई0 में धर्मयुग में प्रकाशित हुई। यह अत्यन्त संवेदनशील और सहज है इन्हें गीत संगीत से बेहद लगाव है उन्होंने एक सौ के लगभग कहानियां लिखी है। उन्होंने अपनी कहानियों के कुछ शीर्षक नायक–नायिकाओं के नाम पर रखे। जैसे– बुआ जी, नकुल, फिर आना, बबलू जवान हो गया। उन्होंने भावात्मकता और प्रतीकात्मकता का सहारा लिया है।

मालती जोशी की कहानियों में प्रमुख रूप से नारी की दयनीय दशा का वर्णन किया है। उन्होंने बकल फिर आना कहानी में मां बाप ने नकुल नामक अपनी बेटी का विवाह दहेज सहित किया था। पर उसके ससुराल वालों ने उसे दहेज कम लाने के कारण जलाकर मार डाला था। दूसरी दुनिया में उच्च शिक्षित सुषमा अपने पिता की गरीबी के कारण मनपसंद लड़के से शादी नहीं कर पाती। विवाह के बाद उसकी दुनिया ही बदल गई। एक घर सपनों का कहानी में मालती जी ने शराबी और निकम्मे पति के द्वारा तिरस्कृत नारी की पीड़ा को व्यक्त किया है। विवाह प्रथा मालती जी की कहानियों की एक महत्वपूर्ण समस्या है। उन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों में पुरुष और नारी के

विवाह की समस्या को उजागर किया है। बाबुल का घर कहानी में लेखिका स्पष्ट करती है कि पच्चीस वर्ष पहले पम्मी का विवाह जैसे–तैसे कर दिया गया था। उस समय विवाह पर कोई विशेष खर्च नहीं हुआ था लेकिन उसकी छोटी बहन सुभी के विवाह के अवसर पर लोक दिखावे के लिए अनावश्यक धन खर्च किया जाता है। यह कहानी स्पष्ट करती है कि लड़की के लिए योग्य वर ढूंढना उसका सौदा करने के समान है। पटाक्षेप कहानी में लेखिका ने प्रेम और विवाह की समस्या को रेखांकित किया है। इस कहानी की नायिका छवि का पति उच्च शिक्षा के लिए विदेश चला जाता है और वह दो वर्ष तक ससुराल में उसकी प्रतीक्षा करती है। किन्तु वह वापिस नहीं आता है पाषाण युग कहानी में नीरजा कहानी की नायिका है उसके माध्यम से लेखिका ने नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व की और संकेत किया है। शोध कार्य में पड़कर नीरजा अपना जीवन चौपट कर बैठती है।

राग–विराग मालती जी की एक और उल्लेखनीय कहानी है। इसकी नायिका मालती है। मालती के माध्यम से लेखिका ने पारिवारिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। मालती दाम्पत्य जीवन को भोगते हुए संघर्ष और विद्रोह का रास्ता अपनाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीमती मालती जौशी के कहानी साहित्य में नीरजा, गीता, भाभी, मालती, छवि, मन्दा मिसरानी, नीलम, निधि आदि कुछ ऐसी पात्र है जिनके व्यक्तिगत और पारवारिक संघर्ष में लेखिका ने वाणी दी है। ये सभी पात्र निम्न मध्यवर्गीय परिवारों के पात्र हैं और पारिवारिक विघटन के शिकार है।

सन्दर्भ

1. ज्योति बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड– करनाल

2. राजकिशोर, स्त्री परम्परा और आधुनिकता वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।